14.
सूचना, संचार और प्रचार सेवाएं

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप) द्वारा कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा के प्रसार हेतु ज्ञान प्रबंधन; सूचना और संचार; प्रचार सेवाओं, एवं सोशल मीडिया जैसे माध्यमों पर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय (डीकेएमए) द्वारा इन गतिविधियों को मांग आधारित, रणनीतिक कार्ययोजना प्रणाली के तहत अनुकूल नीतियों के जरिये क्रियान्वित किया जाता है। इसके अलावा डीकेएमए द्वारा कृषि एवं सम्बद्ध विज्ञान संबंधित अनुसंधान एवं सामान्य सूचना के प्रसार के लिए नोडल सेंटर एवं 'क्लीयरिंग हाउस' की भूमिका भी निभाई जाती है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भाकृअनुप संस्थानों (100), कृविके (641), कृषि विश्वविद्यालयों (71), सीजीआईएआर संस्थानों, संबंधित मंत्रालयों, वैज्ञानिक एवं शैक्षिक संस्थानों तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ कार्य संपर्कों का विकास किया गया है। इस क्रम में विविध कार्यकलाप नियमित तौर पर किए जाते हैं, जिनमें प्रिंट एवं इलैक्ट्रानिक विधाओं पर आधारित सूचना एवं ज्ञान उत्पादों का विकास एवं सृजन; भाकृअनुप, डेयर और एनएआईपी की वेबसाइट सहित सोशल मीडिया का प्रबंधन; ज्ञान प्रबंधन एवं संचार संबंधित प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं का आयोजन; भाकृअनुप की प्रौद्योगिकियों की प्रदर्शनी; पुस्तकालय सेवा सहित सूचना का एकत्रण, भंडारण, प्रेषण एवं प्रसारण; भाकृअनुप मुख्यालय (कैब-I, कैब-II और एनएएससी) के नेटवर्क एवं कनेक्टिविटी इंफ्रास्ट्रक्चर का रखरखाव तथा प्रचार एवं जनसंपर्क सेवा शामिल हैं। दूरदर्शन एवं आकाशवाणी सरीखी सरकारी प्रसारण सेवाओं सहित विभिन्न मीडिया संगठनों को कृषि एवं सम्बद्ध विज्ञान से जुड़े महत्वपूर्ण एवं सामयिक विषयों के चयन एवं विशेषज्ञों की सेवाएं उपलब्ध करवाना भी इसमें शामिल है। भाकृअनुप द्वारा महत्वपूर्ण आयोजनों एवं कृषि विषयों की मीडिया कवरेज हेतु भारत सरकार के प्रेस इंफार्मेशन ब्यूरो तथा इसके विभिन्न क्षेत्रीय केन्द्रों के साथ मजबूत संपर्क भी विकसित किए गए हैं। डीकेएमए द्वारा भाकृअनुप की मीडिया में उपस्थिति दर्शाने एवं परिषद की उपलब्धियों के प्रचार-प्रसार हेतु नियमित प्रेस रिलीज, विज्ञापनों को जारी किया जाता है। इसके अलावा भाकृअनुप के प्रख्यात वैज्ञानिकों के साक्षात्कार/वार्ताओं के प्रसारण की सुविधाएं उपलब्ध करवाने में भी डीकेएमए की महत्वपूर्ण भूमिका है।

डीकेएमए द्वारा भाकृअनुप मुख्यालय, एएसआरबी, एनएआईपी, नास एवं परिषद के संस्थानों द्वारा आयोजित किए जाने वाले राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्व के आयोजनों हेतु सुविधाएं एवं इवेंट मैनेजमेंट में आवश्यक सहायता प्रदान की जाती है। इन सुविधाओं में विशेष प्रकाशन, फोटोग्राफी सेवा, प्रचार सेवा, प्रदर्शनी, लाइव वेबकास्टिंग तथा अन्य संबंधित गतिविधियां शामिल हैं।

नई पहल और उपलब्धियां

- भाकृअनुप के 86वें स्थापना दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर भारत के माननीय प्रधानमंत्री के आगमन पर कृषि प्रौद्योगिकियों एवं उत्पादों की विशेष

प्रदर्शनी का अभिकल्पन एवं आयोजन किया गया जिसमें माननीय प्रधानमंत्री ने रुचि दिखाई। इस अवसर पर लाइव टेलीकास्ट, ब्रॉडकास्ट एवं बेबकास्ट का भी सफल आयोजन किया गया।

- एनएआईपी के समापन के बाद डीकेएमए द्वारा कंसोर्टियम फॉर ई-रिसोर्स इन एग्रीकल्चर (सेरा) के अंतर्गत जारी गतिविधियों के रखरखाव एवं क्रियान्वयन की जिम्मेदारियों को संचालित किया जा रहा है। इससे पूर्व भाकृअनुसं, नई दिल्ली द्वारा एनएआईपी की इस उपपरियोजना को चलाया जा रहा था।
- नई पहल के तहत बड़ी संख्या में लोगों तक पहुंचने, विशेषतौर पर युवा आबादी, के लिए सोशल मीडिया का सुदृढ़ीकरण किया गया और उनके कॉल एवं प्रश्नों के उत्तर उपलब्ध कराए गए। 'ट्रांसफार्मिंग फेस ऑफइंडियन फार्म एण्ड फार्मर्स' विषय पर भाकृअनुप के फेसबुक पेज हेतु एक फोटो प्रतियोगिता और हिन्दी को सोशल मीडिया पर बढ़ावा देने के लिए उपर्युक्त विषय पर आधारित हिन्दी कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दोनों प्रतियोगिताओं में भारी संख्या में प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया।
- भारतीय कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में एनएआईपी के प्रभाव एवं मुख्य उपलब्धियों के प्रचार हेतु जनवरी से जून, 2014 की अवधि में विशेष मीडिया अभियान का आयोजन किया गया। एनएआईपी की उपपरियोजना 'मोबिलाइजिंग मास मीडिया सपोर्ट फॉर शेयरिंग एग्रो इंफार्मेशन' के अंतर्गत यह कार्य किया गया।
- चक्रवात हुदहुद और मानसून के दौरान सूखा जैसी परिस्थितियों में कृषकों को परामर्शदात्री सेवा एवं आकस्मिक योजनाओं की अद्यतन जानकारियों के प्रसार में भाकृअनुप वेबसाइट और सोशल मीडिया ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- सीएमएस पर एनएआईपी की वेबसाइट की बेहतर विजिबिलिटी और दक्ष सामग्री प्रबंधन के लिए इसमें आवश्यक बदलाव किए गए तथा दुबारा डिजायनिंग कर इंटरनेट पर डाला गया।

- नागपुर में भारतीय कृषि पर आयोजित प्रदर्शनी 'कृषि वसंत' (फरवरी, 2014) में भाकृअनुप द्वारा बड़े पैमाने पर हिस्सा लिया गया। भाकृअनुप के मंडप की संकल्पना और इसके आयोजन में डीकेएमए द्वारा मुख्य भूमिका निभाई गई। इस अवसर पर भाकृअनुप की विभिन्न पत्रिकाओं के विशेषांक भी प्रकाशित किए गए।

- 'विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रसार में हिन्दी की भूमिका' विषय पर भाकृअनुप मुख्यालय में हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन हिन्दी चेतना मास के अवसर पर किया गया। इसमें विभिन्न शैक्षिक एवं मीडिया से जुड़े संगठनों के विशेषज्ञों द्वारा विषय से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किए गए ताकि प्रतिभागियों को वैज्ञानिक संचार में हिन्दी के व्यापक प्रयोग हेतु प्रोत्साहित किया जा सके। संगोष्ठी में भाकृअनुप मुख्यालय और संस्थानों के लगभग 100 कर्मचारियों ने हिस्सा लिया।
- कैब-I, कैब-II और एनएएससी के इंटरनेट नेटवर्क को अपग्रेड कर IPv6 नेटवर्क उपकरणों के अनुरूप बनाया गया। कैब-I, कैब-II और एनएएससी में वायरलेस नेटवर्क भी स्थापित किया गया। स्टेट ऑफआर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर पर आधारित नेटवर्क सेंटर की स्थापना कैब-। में की गई ताकि नेटवर्क सुविधाओं का समन्वयन कर बेहतर सेवा प्रदान की जा सके।
- भाकृअनुप पुस्तकालय की विशिष्ट वेबसाइट का अभिकल्पन कर इसे चालू किया गया ताकि ऐसे पुस्तकालय के संभावित उपयोगकर्ताओं को प्रोत्साहित किया जा सके। Web-OPAC सुविधा के साथ KOHA पुस्तकालय प्रबंधन पर आधारित सॉफ्टवेयर को क्रियान्वित किया गया।

ज्ञान प्रबंधन एवं संचार में क्षमता निर्माण

ज्ञान प्रबंधन और संचार के विभिन्न क्षेत्रों में डीकेएमए के माध्यम से भाकृअनुप द्वारा विभिन्न प्रशिक्षणों और कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। कुछ प्रमुख गतिविधियां इस प्रकार हैं:

- नार्स से संबंधितों के लिए सेरा के तहत प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं का आयोजन। विशेषज्ञ और कर्मियों द्वारा संबंधितों को अकादमिक उद्देश्यों के लिए सेरा के अधिकतम प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करना।
- वेबएग्रिस सॉफ्टवेयर के प्रयोग द्वारा एफएओ के एग्रिस डेटाबेस के लिए डेटा इंडेक्सिंग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम और भाकृअनुप एग्रिस डेटाबेस के लिए इनपुट तैयार करना।
- प्रोफेशनल सोसायटियों/अकादमियों द्वारा अनुसंधान पत्रिकाओं के ऑनलाइन प्रकाशन के लिए संपादकीय स्टॉफहेतु प्रशिक्षण एवं कार्यशाला का आयोजन।
- भाकृअनुप वेबसाइट और मास मीडिया के लिए समाचार और सफलता गाथा लिखने हेतु वैज्ञानिकों और प्रसार कर्मियों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन।
- नार्स के वैज्ञानिकों के लिए ज्ञान प्रबंधन और संचार विषय पर व्याख्यान एवं प्रस्तुति।

वैश्विक संपर्क

भाकृअनुप की वेबसाइट (www.icar.org.in) ने द्विभाषी (हिन्दी एवं अंग्रेजी) भाषा के माध्यम से अनुसंधानकर्ताओं, छात्रों, नीति निर्धारकों, कृषकों एवं सोसायटी के अन्य संबंधितों तक ज्ञान एवं सूचना उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वेबसाइट पर समाचारों, सफलता गाथाओं, घोषणाओं, परिपत्रों, निविदाओं तथा अन्य संबंधित सामग्रियों को निरंतर अपडेट किया जाता है। वर्तमान में वैश्विक स्तर पर औसतन तीन लाख हिट्स प्रति माह इस वेबसाइट पर विजिटरों द्वारा दर्ज किया गया। 202 देशों के इन विजिटर्स में से भारत, अमरीका, स्पेन, इंडोनेशिया और ब्रिटेन के राष्ट्र के विजिटर्स शीर्ष पांच स्थानों पर रहे। इस अवधि में औसतन 1.7 लाख विशिष्ट विजिटर्स प्रति माह दर्ज किए गए। लगभग 1,100 नए पृष्ठों को वेबसाइट पर जोड़ा गया और 1,700 से अधिक पृष्ठों को अद्यतन सूचनाओं के साथ अपडेट किया गया। कृषकों एवं प्रसार कर्मियों के लाभ हेतु विशिष्ट मौसम आधारित कृषि के लिए उपयोगी कृषि-परामर्शदाता सेवाएं और आकस्मिक योजनाओं को नियमित आधार पर वेबसाइट पर अपडेट किया जाता रहा। मानसून की कमी की परिस्थितियों और चक्रवाती तूफान हुदहुद की स्थितियों में भाकृअनुप संस्थानों एवं विषयवस्तु विशेषज्ञों द्वारा विकसित

एनएआईपी के मीडिया अभियान की उपलब्धियां

मीडिया दौरों सहित प्रिन्ट, इलैक्ट्रॉनिक और वेब मीडिया के जरिए समग्र कार्यकलाप आयोजित किये गये। कुछ विशिष्ट उपलब्धियां इस प्रकार हैं:

- राष्ट्रीय और क्षेत्रीय मीडिया में अंग्रेजी, हिन्दी, मलयालम, गुजराती, मराठी और तेलुगू में 40 सूचनाप्रद गाथाओं और 65 लेखों का प्रकाशन।
- 5 प्रायोजित फीचरों की विषय सामग्री का सृजन, डिजाइन तैयार कर प्रकाशन राष्ट्रीय अंग्रेजी पत्रिकाओं में किया गया।
- विज्ञापनों की सामग्री का सृजन, डिजाइन तैयार करके अंग्रेजी और हिन्दी के 17 राष्ट्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशन किया गया।
- राष्ट्रीय और क्षेत्रीय चैनलों पर प्रसारण के लिए 10 वीडियो स्पॉट तैयार किये गये।
- एफएम चैनलों पर प्रसारण के लिए हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल, गुजराती, तेलुगू, बांग्ला, मराठी और हरियाणवी में ऑडियो स्पॉट तैयार किये गये।
- नई दिल्ली में प्रैस कांफ्रेंस के साथ कोच्चि, हैदराबाद, श्रीनगर, पुणे, कोयम्बटूर, आणंद, नागपुर और भोपाल में मीडिया दौरों का आयोजन किया गया। प्रत्येक मीडिया दौरे को प्रिंट और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में बेहद कवरेज मिला

'सेरा' की प्रमुख उपलब्धियां

- वर्तमान में नार्स के 147 संस्थानों में सेरा के जरिये महत्वपूर्ण पत्रिकाओं तक 24×7 ऑनलाइन पहुंच है।
- कृषि विज्ञान से संबंधित 2,900 पत्रिकाओं के लेखों तक ऑनलाइन पहुंच। इनमें कंसोर्टियम सदस्यता, पुस्तकालय सदस्यता और ओपन एक्सेस पत्रिकाएं शामिल हैं।
- अनुसंधानकर्ताओं की सहायता के लिए पुस्तकालय सदस्यता पत्रिकाओं (जिनमें सेरा द्वारा सदस्यता नहीं ली गयी) की पूर्ण पाठ्य सामग्री तक पहुंच के लिए डाक्यूमेंट डिलीवरी रिक्वेस्ट सिस्टम शुरू किया गया है।
- सेरा पहुंच तक विशिष्ट समस्याओं के समाधान के लिए लाइव चैट और ऑनलाइन बातचीत।
- सदस्यता ई-डेटाबेस का स्थायी संकलन।

विशिष्ट अपडेट्स को वेबसाइट पर पोस्ट किया जाता रहा। भाकृअनुप की वीडियो फिल्मों को नियमित रूप से यू ट्यूब चैनल पर अपलोड किया गया अब इनकी संख्या बढ़कर 130 तक पहुंच गई है। इनमें वीडियो फिल्में, गणमान्यों एवं प्रख्यात वैज्ञानिकों के व्याख्यान/साक्षात्कार, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों के कार्यक्रम आदि शामिल हैं। चैनल पर इस अवधि के दौरान 1.44 लाख हिट दर्ज किए गए।

भाकृअनुप वेबसाइट द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के अलावा अन्य शैक्षिक संस्थानों के लिंक्स भी उपलब्ध कराए जाते हैं। इसके अलावा संबंधितों को रुचि के अनुरूप विभिन्न राष्ट्रीय योजनाओं एवं नीतियों से कनेक्ट होने का अवसर भी इस वेबसाइट पर मिलता है। यही नहीं वेबसाइट पर ई-पब्लिशिंग (http:epub.icar.org.in/ejournal) के माध्यम से परिषद के महत्वपूर्ण प्रकाशनों को भी उपलब्ध कराया गया है। इस वेबसाइट पर द इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज, द इंडियन जर्नल ऑफ एनिमल साइंसेज, इंडियन जर्नल ऑफ फिशरीज़, इंडियन फार्मिंग और इंडियन हार्टीकल्चर के साथ संबंधित व्यावसायिक/अकादमिक सोसायटियों की 15 अन्य पत्रिकाएं उपलब्ध हैं। भाकृअनुप की ओपन एक्सेस पॉलिसी के तहत वेबसाइट पर विभिन्न प्रकाशन और रिपोर्टें ओपन एक्सेस मोड में उपलब्ध हैं-यथा- आईसीएआर रिपोर्टर, आईसीएआर न्यूज़, आईसीएआर मेल, आईसीएआर चिट्ठी (हिन्दी), एग्बायोटैक डाइजेस्ट और इंडिया आसियान न्यूज़ ऑन एग्रीकल्चर एंड फोरेस्ट्री। द इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज और द इंडियन जर्नल ऑफ एनीमल सांइसेज के दो अर्ध वार्षिक अंक प्रकाशित करके ओपन/ऑनलाइन एक्सेस मोड में उपलब्ध कराये गये।

ओपन एक्सेस मोड में अनुसंधान पत्रिकाओं की उपलब्धता वैश्विक कृषि और पशु विज्ञान अनुसंधानकर्ताओं का ध्यान आकर्षित करती है। द इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज के पंजीकृत उपयोगकर्ता 21,472 हैं। इनमें से 3,233 नये हैं और द इंडियन जर्नल ऑफ एनीमल साइंसेज के 11,607 पंजीकृत उपयोगकर्ता हैं और इनमें 1,846 नये हैं। द इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज के मामले में एक दिन में अत्यधिक उपयोगकर्ता 582 रहे और 6,36,336 बार पेज देखे गय। 53 प्रतिशत लोगों ने पत्रिकाओं में उपलब्ध सूचनाओं की जांच करने के लिए रीविजिट किया। दोनों पत्रिकाओं के आयु अनुसार आंकड़े विश्लेषण से पता लगा कि युवा छात्र, अनुसंधानकर्ता और 55 से 65 वर्ष से अधिक आयुवर्ग के वरिष्ठ विद्वान भी इस सुविधा का प्रयोग कर रहे हैं। इसी तरह 'द इंडियन जर्नल ऑफ एनीमल साइंसेज' के 57 प्रतिशत रीविजिटर रहे और 450,049 दर्शक रहे। अनुसंधान पत्रिकाओं में ऑनलाइन सिस्टम से लेखों के प्रोसेसिंग समय में कमी आयी है।

ज्ञान और सूचना उत्पाद

डीकेएमए द्वारा 12 नियमित प्रकाशन प्रकाशित किये जा रहे हैं। इनमें अनुसंधान पत्रिकाएं; अर्द्ध तकनीकी (लोकप्रिय) पत्रिकाएं और गृह पत्रिका शामिल हैं। इनमें से 8 अंग्रेजी में और 4 हिन्दी में नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। रिपोर्टाधीन अवधि में लगभग 30,000 पृष्ठों का प्रकाशन किया गया। इनमें तकनीकी पुस्तकों, मोनोग्राफ, पाठ्य पुस्तकें, हैण्डबुक, तकनीकी बुलेटिन, ब्रोशर इत्यादि सहित विभिन्न वर्गों के लगभग 230 प्रकाशन शामिल हैं। अनुसंधान कर्मियों, छात्रों, कृषकों और अन्य संबंधितों जैसे लक्षित पाठकों को पहचानकर उनकी जरूरतों के मद्देनजर इन्हें ज्यादा सूचनाप्रद और विशिष्ट बनाने के लिए इन ज्ञानवर्द्धक उत्पादों की सामग्री में बदलाव करने पर विशेष ध्यान दिया गया। अनुसंधान पत्रिकाओं में अग्रणीय विशेषज्ञों के समीक्षा अनुसंधान पत्र नियमित रूप से प्रकाशित किये गये और सामयिक विषयों पर विशेषांक प्रकाशित किये गये। विश्व खाद्य दिवस और कृषि वसंत के अवसर पर खेती और इंडियन फार्मिंग पत्रिकाओं के विशेषांक प्रकाशित किये गये। 'विश्व कृषि वानिकी कांग्रेस' और 'आईवीआरआई के 125 वर्ष' के विशिष्ट अवसरों पर इंडियन फार्मिंग के विशेषांकों का प्रकाशन भी किया गया। 'ट्रॉपिकल रूट्स एंड ट्यूबर्स', सीड सपाइसेज' और 'प्लांटेशन क्रॉप्स' विषयों पर इंडियन हार्टीकल्चर द्वारा विशेषांक प्रकाशित किये गये और फलफूल पत्रिका में 'बीजीय मसालों' पर विशेषांक प्रकाशित किया गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न महत्वपूर्ण एवं रुचिकर विषयों पर ई-प्रकाशन जारी किये गये। विशेष प्रकाशनों के मुद्रण और प्रकाशन के लिए भाकृअनुप के विभिन्न घटकों को डीकेएमए द्वारा विशेषज्ञता एवं परामर्शदात्री सेवा प्रदान की गयी।

प्रचार-प्रसार गतिविधियां

देशभर में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय आयोजनों के अवसर पर भाकृअनुप/डीकेएमए ने भाकृअनुप प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन के लिए लगभग 20 प्रदर्शनियों का आयोजन किया एवं भाग लिया। इनमें प्रमुख हैं-भारतीय विज्ञान कांग्रेस, जम्मू; कृषि विज्ञान कांग्रेस, भुबनेश्वर और कृषि वसंत, नागपुर। इसके अलावा राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर भाकृअनुप संस्थानों के कृषि-एक्सपो के आयोजन में निदेशालय द्वारा सहयोग और समन्वयन किया गया।

एफएओ के एग्रिस डेटाबेस के लिए डीकेएमए नामित राष्ट्रीय इनपुट सेंटर का दायित्व भी निभा रहा है और इस गतिविधि के अंतर्गत 1,350 इनपुट तैयार करके एफएओ को इलैक्ट्रॉनिक तरीके से सप्लाई किये गये। जिससे एफएओ के वेबएग्रीस सॉफ्टवेयर में समाहित करके विश्वभर के उपयोगकर्ता ऑनलाइन सर्च कर सकें। पुस्तकालय सेवा के तहत 10,000 प्रकाशनों का बार-कोड किया गया। पुस्तकालय सुविधाओं के माध्यम से भाकृअनुप मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों को न्यूज़ क्लिपिंग सेवा प्रदान की गयी।

कृषि ज्ञान एवं सूचना को लक्षित पाठकों तक तुरन्त पहुंचाने में डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया की क्षमता के पूर्ण उपयोग के लिए भाकृअनुप अपनी रणनीतियों और गतिविधियों का पुनर्निधारण कर रहा है। पारम्परिक और वेब टूल्स को मिलाकर तथा अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक और मीडिया संगठनों से संपर्क विकसित करके नार्स की प्रमुख उपलब्धियों को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शन के लिए विशेष प्रयत्न किये जा रहे हैं।

❑